P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जांजगीर चांपा जिले में कृषि उत्पादकता एवं उसका प्रभाव : एक अध्ययन

मंजुला दुबे
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
डॉ सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड, कोटा, बिलासपुर

सूर्यकांत भारद्वाज
शोधकर्ता,
भूगोल विभाग,
डॉ सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड, कोटा, बिलासपुर

सारांश

जांजगीर चांपा जिले में कृषि उत्पादकता एवं उसका प्रभाव का अध्ययन कर रहें है। जिसमें भूमि परीक्षण भूमि सुधार तथा सिंचाई व्यवस्था के साथ रबी खरीफ व जायद फसल का अध्ययन करके विश्लेशण कर रहे हैं तथा कृषि से होने वाले आर्थिक,सामाजिक,सांस्कृतिक रूप से होने वाले प्रभाव का अध्ययन कर रहे हैं। जनसंख्या का तथा साक्षरता का प्रभाव कृषि की दशा तथा दिशा में पड़ने वाले प्रभावो का अध्ययन कर रहे है। कृषि औजारो तथा पशु पालन तथा का अध्ययन करके कृषिगत उन्नत तकनीक के लिए प्रोत्साहन देना।

मुख्य शब्द : मृदा परीक्षण,कृषि उत्पादकता,रबी तथा खरीब फसल, वार्षिक सिंचाई क्षेत्र।

प्रस्तावना

जांजगीर चांपा जिले में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि आर्थिक क्रिया कलापों एवं वातावरण का एक अंतरसंबंधित एवं विशिष्ट रूप है। कृषि प्रमुख रूप से भारत में आर्थिक तंत्र का प्रमुख स्त्रोत है। तथा भारत में 71% लोग आज भी कृषि के उपर में आश्रित है। भारत के अलग–अलग राज्यों में कृषि की दिशा और दशा दोनो में बहुत अंतर देखने को मिलता है।

हमारे देश में कृषि को लेकर पूरे अलग–अलग राज्यों में समन्वय तथा जागरूकता का अलग–अलग रूप देखने को मिलता है। तथा राज्यों में कृषि का फसलोत्पादन तथा प्रभाव का तरीका भिन्न–भिन्न होता है।

एक कारण कृषि गत भूभाग तथा वातावरणीय प्रभावों का भी होता है। जिसके कारण से कृषि की प्रकार्यता तथा उत्पादन में भिन्नता दिखाई देती है।

हम छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर चांपा जिला के कृषि उत्पादकता तथा प्रभाव का अध्ययन कर रहे है।

राज्य स्तर में कृषि का फसलोत्पादन में अनेक विषमताएँ दिखाई देती है। तथा आज भी अधिकतर किसान परंपरागत कृषि को करना पसंद करते है। तथा आधुनिक कृषि में भरोसा नही करते है। हमारे देश में 1960 के दशक से ही हरित क्रांति रूपी आधुनिक कृषि ने कदम रखा तथा उत्तर भारत के बहुत सारे राज्यों को फसल उत्पादन में वृद्धि किया, इन राज्यों में आधुनिक कृषि को बहुत प्रोत्साहन दिया जा रहा है। फलस्वरूप फसल उत्पादन में बहुत वृद्धि देखने को मिला है। लेकिन जांजगीर चांपा की कृषि व्यवस्था अधिक स्थानों में पारंपरिक है। तथा हम इसमें आधुनिक कृषि को महत्व दे तो फसल उत्पादन में वृद्धि के साथ किसान के समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, रूप से अपने जीवन को बेहतर कर सकते है।

इस जिले में समस्याओं को देखे तो–

1. भूमि का अनुपजाऊपन
2. भूमि सुधार समस्या
3. फसल बीमा योजना का लाभ न लेना
4. पर्याप्त सिंचाई का अभाव
5. उन्नत बीजो का प्रयोग ना करना
6. फसल कटाई के लिए तकनीकों का उपयोग न करना

ये सभी समस्याएँ हमारे सामने विद्यमान है।

जांजगीर चांपा की प्रमुख फसलें

1. धान
2. गेहूँ
3. अरहर
4. कोदो

5. तिवरा
6. चना

कृषि उत्पादकता अनेक कार्य पर निर्भर करते है

भौतिक कारण, उन्नत बीज, उर्वरक, सिंचाई, यंत्रीकरण, वर्षा, किसान प्रशिक्षण, शिक्षा व्यावस्था, ये प्रमुख कारण हैं जो कृषि फसल उत्पादन को प्रभावित करता है।

साहित्यावलोकन :

1. प्रदीप कुमार गुप्त 2000 ने ''उत्तर प्रदेश में कृषि उत्पादों के मूल्य परिवर्तनों का कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव पर अध्ययन किया है तथा कृषि मूल्यो में परिवर्तन का प्रभाव उत्पादन तथा उपयोगिता पर किस प्रकार से पड़ा तथा इसके लिए सुझाव के रूप में तकनीकी ज्ञान कृषि मूल्यों क्षेत्र उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रकाशित किया है।
2. प्रो. बी.के. चौरसिया 2001 ने लघु सिंचाई साधनों का कृषि उत्पादन रोजगार तथा आय पर पड़ने वाले प्रभावों का एक अनुशीलन (मध्य प्रदेश के रायपुर जिले के संदर्भ मे) इन्होने प्रति एकड़ उत्पादन, प्रति श्रमिक उत्पादन, लघु सिंचाई साधनों का उत्पादन प्रभाव, सिंचाई साधनों का प्रभाव, सिंचाई साधनों का रोजगार आय पर प्रभाव, रोजगार की उपलब्धता के उपर प्रकाश डाला है।
3. राम आधार प्रसाद 2002 ने '' वाराणसी जनपद में कृषि उपजों का विपणन'' विषय के उपर शोध किया है। उन्होने कृषि उत्पादन परंपरागत व्यवस्था के उपर कार्य किया है। तथा प्रमुख उपजों की उत्पादन की विपणन व्यवस्था बेहतर बनाने का भी प्रयास किया है। कृषि विपणन में आने वाली समस्याओं से अवगत कराते हुए सुझाव भी प्रस्तुत किए है।
4. धीरेन्द्र कुमार मिश्र ने 2002 में बलिया जनपद में कृषि–परिस्थितिकी दशाओं का आकलन एवं कृषि विकास का मापन मे अध्ययन किया। इन्होने कृषि विकास का तात्पर्य कृषि की निम्न उत्पादकता वाली परंपरागत पद्धति मे परिष्कार कर उसे उच्च उत्पादकता से युक्त एक वैज्ञानिक एवं आधुनिक स्वरूप प्रदान करना है।
5. विभाकर त्रिपाठी ने 2002 मे कृषि विकास मे सामाजिक–आर्थिक कारकों की भूमिका (आजमगढ़ जनपद के गांवो के विशेष संदर्भ मे) इन्होने कृषि विकास मे सामाजिक कारकों की भूमिका के उपर प्रकाश डाला है।
6. श्रीमती शकुंतला डेहरे ने 2005 ''रायपुर नगर में जनसंख्या अप्रवासन एक आर्थिक विश्लेषण के उपर कार्य किया है। इन्होने भूमि उपयोग का तरीका बताया है। जो काफी महत्वपूर्ण है। भूमि उपयोग में आवासीय, वाणिज्यिक, औद्योगिक सार्वजनिक एवं अन्य उपयोगिताएँ मनोरंजन आदि क्षेत्र की भूमि उपयोगिता के लिए सुझाव प्रस्तुत किए है।
7. केदार नाथ यादव ने 2006 में जनसख्या वृद्धि एवं कृषि उत्पादकता नियोजन हमीरपूर जनपद का भौगोलिक अध्ययन, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी से प्रस्तुत किया, इन्होने खाद्य उत्पादन नियोजन, धान विकास कार्यक्रम, दलहनी विकास कार्यक्रम तिलहल विकास कार्यक्रम, बंजर एवं परती भूमि के कृषि के अन्तर्गत लाने एवं उत्पादन में वृद्धि हेतु योजना, उत्पादन वृद्धि हेतु योजना, रबी फसल हेतु सुझाव, खरीब फसल हेतु सुझाव,
8. करूणा निधि सिंह ने 2006 ''1990–91 से कृषि मूल्यों तथा उत्पादनों में परिवर्तन'' विषय को सविस्तार अध्ययन किया इन्होने पूर्वी उत्तर प्रदेष तथा उसके होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया। 1991–93 तथा 2002–03 में अंतर स्थापित किया तथा आने वाले समय में कृषि उत्पादकता को और बेहतर करने के लिए सुझाव भी प्रस्तुत किए है।
9. प्रवीण कुमार ने 2007 में '' कृषि साख के माध्यम से कृषि का आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन–एक अध्ययन'' – इन्होने भूमि परीक्षण उपयोग, सिंचाई, उच्च भूमि कृषि, निम्न कृषि भूमि का अध्ययन किया है।
10. आशीष कुमार सिंह 2010 मे जालौन जनपद मे कृषि विकास का सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं पर प्रभाव मे अध्ययन किया इन्होने भूमि उपयोग, कृषि भूमि उपयोग, सिंचाई के साधन और श्रोत, उन्नत कृषि यंत्र, कृषि जोत आकार एवं क्षेत्र फसल के उपर प्रकाश डाला है।
11. रितेश जायसवाल ने 2013 मे उत्तर प्रदेश मे कृषि उत्पादन की प्रवृत्तियों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन के उपर मे काम किया इन्होने दलहन उत्पादन, तिलहन उत्पादन, चांवल विकास की एकीकृत योजना पर प्रकाश डाला, उर्वरक नमूनों का प्रयोगशाला वार लक्ष्य बनाया है।

अध्ययन क्षेत्र

छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर चांपा जिले में परंपरागत कृषि पद्धति की जगह आधुनिक कृषि पद्धति के माध्यम से फसलोत्पादन में वृद्धि एवं विकास को प्रोत्साहन देना है। तथा किसानों के आय में वृद्धि करना प्रमुख कारण है। जांजगीर चांपा जिले में बेहतर सिंचाई व्यवस्था, उन्नत बीज उपयोग तथा सामाजिक कृषि जागरूकता] भूमि सुधार, उचित उर्वरक उपयोग प्रमुख कारण है। छत्तीसगढ़ के जांजगीर चांपा जिले में कृषि उत्पादकता एवं उसका प्रभाव का अध्ययन कर रहें है।

जांजगीर चांपा जिले का प्रादुर्भाव 25 मई 1998 को हुआ, तथा छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण सन् 2000 मे हुआ। इस नये राज्य का प्रादुर्भाव मध्य प्रदेश से विभाजित होकर हुआ था। जांजगीर चांपा छत्तीसगढ़ राज्य का हृदय स्थल कहा जाता है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 446674 हेक्टेयर है, वन क्षेत्र 9910 हेक्टेयर है, अक्षांश $82°3'$ डिग्री से $83°2'$ डिग्री पूर्व की ओर स्थित है। देशांतर $21°6'$ डिग्री से $22°4'$ डिग्री उत्तर दिशा की ओर स्थित है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तावित शोध कार्य का अध्ययन जांजगीर–चांपा जिले के मैदानी भागों में कृषि उत्पादकता तथा उसके प्रभावों का अध्ययन कर रहें हैं तथा जहां की उच्चावच संरचना, अपवाह तंत्र, सिंचाई व्यवस्था तथा उत्पादन क्षमता का अध्ययन करेंगे।

1. कृषि के पिछड़ेपन को दूर करना तथा परम्परागत कृषि व्यवस्था के स्थान पर आधुनिक कृषि को महत्व प्रदान करना है।
2. कृषि गत किसानों का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से विकास करना।
3. सिंचाई व्यवस्था को बेहतर करना है तथा सिंचित और असिंचित क्षेत्रों का वर्गवार अध्ययन करके विश्लेषण करना।
4. ऊपज को बढ़ाने के लिए कृषि दशाओं का अध्ययन करके उपाय निकालना है।
5. उर्वरकों का उचित उपयोग हेतु वहां की मिट्टी का परीक्षण करके उचित उर्वरक का उपयोग करना है।
6. कृषक प्रशिक्षण केन्द्र प्रत्येक गांव में कराने हेतु कृषि जागरूकता कार्यक्रम तैयार करना।
7. भूमि उपयोग के लिए शासन द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के लिये जागरूकता तथा मुफ्त में भूमि सुधार व्यवस्था का क्रियांवयन करना।
8. उद्यानिकी कृषि को महत्व प्रदान करने हेतु उन्नत बीज तथा उर्वरक के साथ सिंचाई के आधुनिक तरीकों का उपयोग करना।
9. कृषि संबंधित नई योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाना।

अध्ययन विधियॉ

प्राथमिक संकलन

जो आंकड़े सर्वेक्षण के उद्देश्य के अनुसार पहली बार मौलिक रूप में संकलित किए जाते हैं, प्राथमिक आंकड़े कहलाते हैं।

उदाहरण के लिए एक अनुसंधानकर्ता द्वारा एक गांव में चाय या काफी पीने की आदत वाले व्यक्तियों के बारे में संकलित आंकड़े प्राथमिक संकलन कहलाता है।

निदर्शन विधि

जांजगीर चांपा के मृदा परीक्षण विभाग द्वारा 2017–18 में प्राप्त जानकरी के अनुसार 4 तहसीलो से 1610 सैम्पल लिया गया हैं।

1. अवलोकन विधि
2. प्रश्नावली
3. साक्षात्कार :–जांजगीर चांपा के जिले के मृदा परीक्षण विभाग के अधिकारी एम.के.मरकाम सहायक मृदा परीक्षण अधिकारी से मृदा परीक्षण को लेकर साक्षात्कार किया तथा सुझाव भी बताये

द्वितीयक संकलन

जब हम उन आंकड़ों का प्रयोग करते हैं जो दूसरों के द्वारा पहले से ही संकलित हैं तो वे द्वितीयक आंकड़े कहलाते हैं। आंकड़े उस एजेन्सी के लिए प्राथमिक हैं जो इन्हें पहली बार संकलित करती है और शेष सभी प्रयोगकर्ताओं के लिए वे द्वितीयक हो जाते हैं। द्वितीयक संकलन कहलाता है।

1. सांख्यिकी विभाग :– जनसंख्या, साक्षरता दर 2011 के अनुसार आकड़ा संग्रहित किया
2. भूमि अभिलेख :– जांजगीर चांपा के भू–अभिलेख विभाग से कृषि उत्पादकता एवं सिंचाई क्षमता एवं कृषि औजार का आकड़ा लिया है।
3. कृषि विभाग :– कृषि विभाग से फसलों का संपूर्ण क्षेत्र आकड़ा संग्रहित किया
4. दूरसंचार
5. पुस्तको के द्वारा आकड़ों का संग्रहण किया जाता है।

शोध कार्य का अपेक्षित परिणाम

1. कृषि के पिछड़ेपन को दूर किया जा सकता है।
2. कृषिगत आय में वृद्धि होगा।
3. सिंचाई व्यवस्था बेहतर हो जायेगा।
4. उपज को बढ़ावा मिलेगा।
5. उचित उर्वरकों का प्रत्येक किसान उपयोग करना सीख जायेंगे।
6. कृषक प्रशिक्षण से किसान कृषि के क्षेत्र में उन्नत उपज करने में सक्षम हो जायेगा।
7. भूमि उपयोगिता का ज्ञान होगा :–

Ph किसानो के खेतो से लिए गये

1. कुल सैंपल 45072
2. अम्लीय सैंपल 23408
3. उदासीन सैंपल 16919
4. लवणीय 1974
5. क्षारीय 171

नाइट्रोजन किसानों के खेत से लिए गये

1. कुल सैंपल 45072
2. सैंपल निम्न 35869
3. सैंपल मध्यम 6894
4. सैंपल उच्च 239

इतने सैंपल में अधिक मात्रा में अम्लीय तत्व पाया गया जो मिट्टी के लिए तथा कृषि के लिए हानिकारक हैं।

सुझाव

1. अधिक अम्लीय होने पर चूना का छिडकाव करना चाहिए ।
2. क्षारीय होने पर जीप्सम का छिडकाव करना चाहिए।
3. उद्यानिकी कृषि को बढ़ावा मिलेगा

सुझाव एवं निष्कर्ष

जांजगीर चांपा जिले के सभी नौ तहसीलो में कृषिगत सिंचाई के मुख्य श्रोतो का अध्ययन करके बेहतर सिंचाई व्यवस्था तथा उन्नत तकनीक की सहायता से बेहतर सिंचाई व्यवस्था की जा सकती है। मिट्टी परीक्षण 2018 में प्रमुख चार ब्लाक के अध्ययन में 16010 सैम्पल में गुणवत्ता की कमी देखी गई है। तथा मिट्टी में अम्लीयता की अधिकता हो गई है अतः उन स्थानो पर चूना डालकर अम्लीयता को दूर किया जा सकता हैं। तथा किसानो को अधिक मिट्टी का परीक्षण करना चाहिए जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बड़ाया जा सकता है। जांजगीर चांपा में सिंचाई के मुख्य श्रोत नहर है फिर भी सभी स्थानो पर समान सिंचाई नही हो पाती है अतः मुख्य

नहरो के साथ कुछ सहायक नहरो का विकास होना जरूरी है। फसल वार अध्ययन से यह पता चला है कि धान की कृषि इस क्षेत्र में अधिक हो रही हैं किन्तु अन्य फसलों की उत्पादन क्षमता कम है, अतः इस क्षेत्र में मिश्रित खेती जैसे रबी फसल,दलहन,तथा तिलहन व जायद फसल की ओर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। तथा धान की खेती के साथ अन्य खेती को प्रोत्साहन मिलेगा तथा उत्पादकता में वृद्धि होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कुमार प्रवीण 2007 में ''कृषि साख के माध्यम से कृषि का आर्थिक विकास एवं समाजिक परिवर्तन :– एक अध्ययन, पं. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) अर्थशास्त्र विभाग।*
2. *गुप्त प्रदीप कुमार 2000 ''उ.प्र. में कृषि उत्पादों के मूल्य परिवर्तनों का कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, राज बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय गुलालपुर, जौनपुर (उ.प्र.) अर्थशास्त्र विभाग नां.सं. PU88/39161*
3. *चौरसिया प्रो. वी. के. 2001 ने लघु सिंचाई साधनों का कृषि उत्पादन रोजगार तथा आय पर पड़ने वाले प्रभावों का एक अनुशीलन (मध्य प्रदेश के रायपुर जिले के संदर्भ मे) पं. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)।*
4. *जायसवाल रितेश 2013 मे'' उत्तर प्रदेश मे कृषि उत्पादन की प्रवृत्तियों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद (उ.प्र.)।*
5. *डेहरे श्रीमती शकुंतला 2005 '' रायपुर नगर में जनसंख्या अप्रवासन एक अर्थिक विश्लेषण'' पं. रविशंकर वि.वि. रायपुर अर्थशास्त्र विषय।*
6. *तिवारी आर. सी. , सिंह बी.एन. 2013 कृषि भूगोल।*
7. *प्रसाद राम आधार 2002 ''वाराणसी जनपद में कृषि उपजों का विपणन'' वाणिज्य विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल वि.वि. जौनपुर (उ.प्र.)।*
8. *मिश्र धीरेन्द्र कुमार ने 2002 मे '' बलिया जनपद में कृषि–परिस्थितिकी दशाओं का आकलन एवं कृषि विकास का मापन'' वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर (उ.प्र.)।*
9. *यादव केदार नाथ 2006 '' जनसंख्या वृद्धि एवं कृषि उत्पादकता नियोजन हमीरपुर जनपद का भौगोलिक अध्ययन'' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी।*
10. *सिंह आशीष कुमार 2010 मे जालौन जनपद मे कृषि विकास का सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं पर प्रभाव, छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय कानपुर।*
11- *सिंह करूणा निधि 2006 ''1990–91 से कृषि मूल्यों तथा उत्पादनों में परिवर्तन'' अर्थशास्त्र विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल वि.वि. जौनपुर (उ.प्र.) नां. सं. PU98/711*
12. *त्रिपाठी विभाकर ने 2002 मे कृषि विकास मे सामाजिक–आर्थिक कारकों की भूमिका (आजमगढ़ जनपद के गांवो के विशेष संदर्भ मे) श्री गांधी स्नात्कोत्तर महाविद्यालय मालटारीक आजमगढ़ (उ.प्र)।*